



DR. G. VELUCHAMY

Dr. G. Veluchamy is a senior Siddha Physician known for his devoted services for the cause of Siddha System of Medicine for more than fifty years.

2. Born on 3rd November, 1947, at Panayadipatti, a small village in Virudhunagar district in Tamil Nadu, Dr. Veluchamy received his Bachelor of Indian Medicine degree from the University of Madras in 1969 and Doctor of Medicine (Siddha) degree from Madurai Kamaraj University in 1975. He started his career in 1970 as Assistant Lecturer in Government Siddha Medical college at Palayamkottai, Tamil Nadu. Later on, he worked as Head of the Siddha section in Arignar Anna Hospital for Indian Systems of Medicine, Chennai upto 1981.

3. Dr. Veluchamy joined in 1981 as Assistant Director (Siddha) in Central Research Institute for Siddha at Chennai, a unit of Central Council for Research in Ayurveda and Siddha, Ministry of AYUSH, Government of India. As a Researcher, he started his research in literacy and clinical side. He was instrumental to collect more than 1500 palm leaf manuscripts pertaining to Siddha System of medicine and out of these manuscripts, 14 original Siddha texts were edited and published and these books were very useful for UG and PG students as well as the researchers.

4. Dr. Veluchamy took initiatives to establish the safety and efficiency of Siddha medicines based on modern parameters as per the standards laid down by WHO under his supervision. Diseases like Psoriasis, Cancer, Rheumatoid Arthritis, Diabetesmellitus, Vitiligo were selected for conducting clinical trials at Central Research Institute of Siddha and the results were published in many journals and organized 9 national level seminars/workshops through which the outcome of research on the above diseases were presented among the experts of other system of medicines including Allopathic doctors to prove that Siddha medicines are safe, effective and based on the scientific lines.

5. During his tenure as Director, Central Council for Research in Ayurveda & Siddha, New Delhi from 1999 to 2003, Dr. Veluchamy participated in many international conferences and events like Expo 2000, Hannover, Germany, presentation before the Sub-committee of House of Lords, London UK; Made in India Show in Johannesburg, South Africa, intergovernmental committee on intellectual property and Genetic Resources Traditional folklores at World Intellectual Property Organization HQ, at Geneva.

6. After his retirement in 2007, Dr. Veluchamy continues his service to the Department of AYUSH, Government of India at various capacities. At present, he is the Chairman of Scientific Advisory Board, Central Council for Siddha, Chairman of Siddha Pharmacopoeia Committee, Pharmacopoeia Commission for Indian Medicine and Homoeopathy, Ministry of AYUSH, Government of India and member in Ayurveda Siddha Unani Drug Technical Advisory Board, Department of AYUSH.

7. Dr. Veluchamy is the recipient of lifetime achievement award from Tamil Nadu Dr. M.G.R Medical University in 2012 in recognition of his exemplary contributions to the cause of Siddha System of Medicine.



डॉ. जी. वेलुच्चामी

डॉ. जी. वेलुच्चामी एक वरिष्ठ सिद्ध चिकित्सक हैं, जिन्होंने सिद्ध चिकित्सा पद्धति के लिए पचास से अधिक वर्षों तक अपनी निष्ठावान सेवाएं दी हैं।

2. 3 नवंबर, 1947 को तमिलनाडु के विरुद्धनगर जिले के एक छोटे से गांव पनयाडिपट्टी में जन्मे, डॉ. वेलुच्चामी ने 1969 में मद्रास विश्वविद्यालय से भारतीय चिकित्सा में स्नातक की डिग्री और 1975 में मदुरै कामराज विश्वविद्यालय से डॉक्टर ऑफ मेडिसिन (सिद्ध) की डिग्री प्राप्त की। 1970 में उन्होंने तमिलनाडु के पलयमकोट्टई में सरकारी सिद्ध मेडिकल कॉलेज में सहायक व्याख्याता के रूप में अपना करियर शुरू किया। बाद में, उन्होंने 1981 तक चेन्नै के अरिगनार अन्ना हॉस्पिटल फॉर इंडियन सिस्टम्स ऑफ मेडिसिन में सिद्ध अनुभाग के अध्यक्ष के रूप में काम किया।

3. डॉ. वेलुच्चामी ने 1981 में केंद्रीय सिद्ध अनुसंधान संस्थान, चेन्नै में सहायक निदेशक (सिद्ध) के तौर पर काम करना शुरू किया, जो सेंट्रल काउंसिल फॉर रिसर्च इन आयुर्वेद एंड सिद्ध, आयुष मंत्रालय, भारत सरकार की एक इकाई है। एक शोधकर्ता के रूप में, उन्होंने साक्षरता और नैदानिक पक्ष में अपना शोध शुरू किया। उन्होंने चिकित्सा की सिद्ध प्रणाली से संबंधित 1500 से ज्यादा ताड़ के पत्तों की पांडुलिपियों को इकट्ठा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और इन पांडुलिपियों में से 14 मूल सिद्ध ग्रंथों को संपादित और प्रकाशित किया गया। ये किताबें स्नातक और स्नातकोत्तर छात्रों के साथ-साथ शोधकर्ताओं के लिए बहुत उपयोगी साबित हुईं।

4. डॉ. वेलुच्चामी ने अपनी देखरेख में विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा निर्धारित मानकों के अनुसार आधुनिक मापदंडों के आधार पर सिद्ध दवाओं की सुरक्षा और प्रभाव स्थापित करने की पहल की। केंद्रीय सिद्ध अनुसंधान संस्थान में क्लीनिकल परीक्षण करने के लिए सोरायसिस, कैंसर, रुमेटाइड आर्थराइटिस, डायबिटीजमेलिटस, विटिलिगो जैसे रोगों को चुना गया और इसके नतीजे कई पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए। 9 राष्ट्रीय स्तर की संगोष्ठियों/कार्यशालाओं का आयोजन किया गया, जिनके जरिये इन रोगों पर शोध के नतीजों को एलोपैथिक डॉक्टरों सहित अन्य चिकित्सा पद्धति के विशेषज्ञों के बीच प्रस्तुत किया गया ताकि यह साबित किया जा सके कि सिद्ध दवाएं सुरक्षित, प्रभावी और वैज्ञानिक तर्कों पर आधारित हैं।

5. 1999 से 2003 तक सेंट्रल काउंसिल फॉर रिसर्च इन आयुर्वेद एंड सिद्ध, नई दिल्ली के निदेशक के रूप में अपने कार्यकाल के दौरान, डॉ. वेलुच्चामी ने एक्सपो 2000, हनोवर, जर्मनी जैसे कई अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों और कार्यक्रमों में भाग लिया, हाउस ऑफ लॉर्ड्स, लंदन यूके की उप-समिति; जोहान्सबर्ग, दक्षिण अफ्रीका में मेड इन इंडिया शो, जिनेवा में विश्व बौद्धिक संपदा संगठन मुख्यालय में बौद्धिक संपदा और आनुवंशिक संसाधन, पारंपरिक लोककथाओं पर अंतर सरकारी समिति के सामने प्रस्तुतियां दीं।

6. 2007 में सेवानिवृत्ति के बाद, डॉ. वेलुच्चामी ने भारत सरकार के आयुष विभाग में विभिन्न पदों पर अपनी सेवाएं देना जारी रखा। वर्तमान में, वे वैज्ञानिक सलाहकार बोर्ड, केंद्रीय सिद्ध परिषद के अध्यक्ष, सिद्ध फार्माकोपिया कमीटी, फार्माकोपिया कमीशन फॉर इंडियन मेडिसिन एंड होम्योपैथी, आयुष मंत्रालय, भारत सरकार के अध्यक्ष और आयुष विभाग के आयुर्वेद सिद्ध यूनानी औषधि तकनीकी सलाहकार बोर्ड के सदस्य हैं।

7. डॉ. वेलुच्चामी को सिद्ध चिकित्सा प्रणाली में उनके अनुकरणीय योगदान के लिए 2012 में तमिलनाडु के डॉ. एमजीआर मेडिकल यूनिवर्सिटी से लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड मिल चुका है।